Sutra

A thread of togetherness

भारत के शांत खेतों और चहल-पहल से भरे घरों में एक खामोश क्रांति आकार ले रही है। मार्च 2025 तक, देशभर की **1.48 करोड़ महिलाएं "लखपति दीदी"** बन चुकी हैं, वे महिलाएं जिन्होंने अपने परिश्रम और हुनर से सालाना एक लाख रुपये से अधिक की आय हासिल की है। लेकिन यह कहानियां केवल महिलाओं की आय की नहीं बल्कि लाखों दीदियों के जीवन में आए सकारात्मक बदलाव की कहानियां हैं।

नंदपुर, कोरापुट, ओडिशा

A QUARTERLY MODEL CLUSTER LEVEL FEDERATION (MCLF) NEWSLETTER

EDITION 1
APRIL-JUNE, 2025

"DAY-NRLM के अंतर्गत क्लस्टर लेवल फेडरेशन्स महिलाओं की इच्छा, संपन्नता और कल्याण की एक सशक्त लहर को ऊर्जा रही हैं। ये मज़बूत संस्थाएँ समृद्धि, सम्मान और प्रगति की नई धारा गढ़ रही हैं, जो भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को उन उत्पादों से सशक्त बना रही हैं जो सांस्कृतिक, शिल्पपरक और किफायती हैं तथा हमारी परंपरा, कला और सामुदायिक पहचान को संजोए रखते हैं। हर सीएलएफ केवल एक संस्था नहीं, बल्कि निर्भीक महिला नेतृत्व की शक्ति है, जो गाँवों को विकास के जीवंत केंद्रों में बदल रही है।"

डॉ. चंद्रशेखर पेम्मासानी
केंद्रीय ग्रामीण विकास एवं संचार राज्यमंत्री,
भारत सरकार

"प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में लखपति दीदियों द्वारा विकसित भारत की मजबूत नींव रखी जा रही है। इस मुहिम में संकुल स्तरीय संगठन (सी.एल.एफ) आर्थिक, सामाजिक, और आजीविका के स्तर पर महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं। यह केवल संस्थाएं नहीं, बल्कि सामूहिक जज़्बे, नेतृत्व और बदलाव के जीवंत प्रतीक हैं।"

शिवराज सिंह चौहान
केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और
ग्रामीण विकास मंत्री,
भारत सरकार

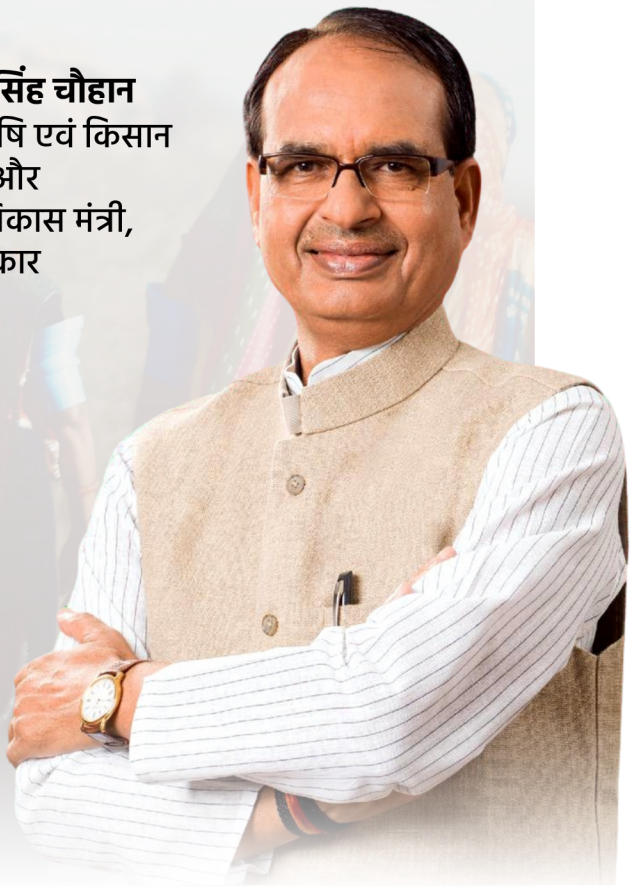

त्रिपुरा

कृषि सखी, स्वप्ना दीदी के साथ एक दिन

इस अंक में हम आपको मिलवा रहे हैं त्रिपुरा के तेपनिया ब्लॉक की बीजोयी क्लस्टर लेवल फेडरेशन से जुड़ी कृषी सखी स्वप्ना देबनाथ दीदी से, जो खेतों की हरियाली और महिलाओं की तरक्की के बीच सेतु बनकर उभर रही हैं।

स्वप्ना देबनाथ

महिला समूह	अन्नपूर्णा
ग्राम संगठन	एकता ग्राम संगठन
मॉडल सी.एल.एफ	बिजोयी महिला क्लस्टर बहुमुखी समवाय समिति लिमिटेड
पंचायत	अमतली

गाँवों की हरियाली, फलते-फूलते किचन गार्डन और समृद्ध खेतों के पीछे बदलाव की नींव रख रहे कुछ अदृश्य प्रयास होते हैं। ये प्रयास है, कृषी सखियों के, ये महिलाएं सिर्फ़ खेत नहीं सींचतीं, बल्कि ज्ञान, आत्मनिर्भरता और जागरूकता की भी फसल बोती हैं। इस अंक में हम लेकर आए हैं स्वप्ना दीदी की कहानी, जो न सिर्फ़ एक कृषी सखी हैं, बल्कि एक मार्गदर्शक, एक प्रेरणा और बदलाव की वाहक भी हैं।
उनका दिन घर के कामों से शुरू होता है, फिर वो समूहों को प्रशिक्षित करती हैं, विभिन्न विभागों से समन्वय करती हैं और गाँव में जैविक खेती को अपनाने के लिए महिलाओं को प्रेरित करती हैं।
आईए देखते है कैसे गुज़रता है उनका एक आम दिन...

दिन की शुरुआत

दिन की शुरुआत जल्दी होती है। स्वप्ना दीदी सूरज निकलने से पहले अपने घरेलू काम पूरी कर लेती हैं।

सुबह
05:00 बजे

सुबह
08:00 बजे

दिन की योजना

अपने घर के पोषण वाटिका (नुट्रिशन गार्डन) के देखभाल के साथ-साथ दिन की योजना बनाती हैं और प्राथमिकताओं की समीक्षा करती हैं।

समन्वय

वह ब्लॉक स्थित कृषि कार्यालय जाती हैं, बीजों की व्यवस्था करती हैं और पोषण वाटिकाओं व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के संकल्प के अनुसार कार्य करती हैं।

सुबह
10:00 बजे

सुविधा

क्षेत्र भ्रमण के दौरान कृषि पाठशाला पहुंचती हैं, जहां वह विभिन्न एसएचजी समूह के महिलाओं को प्राकृतिक खेती के लाभ के बारे में जागरूक करती हैं।

दोपहर
12:00 बजे

निगरानी

वह क्षेत्र में एसएचजी सदस्यों से मिलती हैं, किचन गार्डन और वर्मी कम्पोस्ट पिट्स एवं अन्य कृषि संबंधित गतिविधियों के प्रगति की समीक्षा करती हैं।

दोपहर
03:00 बजे

प्रदर्शन

वह प्रोड्यूसर ग्रुप के पास जाती हैं, वर्मी कम्पोस्ट के उत्पादन का निरीक्षण करती हैं और सुनिश्चित करती हैं कि सब कुछ सुचारू रूप से चल रहा है।

शाम
05:00 बजे

अपडेट

वह अपनी डायरी अपडेट करती हैं और एम-सीएलएफ व्हाट्सएप ग्रुप पर सारी जानकारी साझा करती हैं।

शाम
06:00 बजे

झारखंड

स्क्रीन पर दिखा सपना, ज़मीन पर हुआ सच: पोल्ट्री से बदली दीदियों की दुनिया

जब यूट्यूब बना टंगरिया के महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत

बेड़ो: रांची जिले के बेड़ो ब्लॉक के टंगरिया गांव की वो सुबह आम नहीं थी। अंजलि महिला समूह की बारह दीदियाँ हमेशा की तरह अपने स्वयं सहायता समूह की बैठक में बैठी थीं। प्रार्थना सभा के बाद एक दीदी ने अपने मोबाइल पर यूट्यूब वीडियो चलाया। मोबाइल स्क्रीन पर चल रही यूट्यूब वीडियो ने कमरे की चुप्पी तोड़ दी, विषय था मुर्गी और बत्तख पालन। वीडियो में मुर्गी और बत्तख के कुशल पालन की विधि को एक महिला के द्वारा बताया जा रहा था। वीडियो खत्म होते-होते किसी ने कहा, "हम भी कर सकते हैं, क्यों नहीं?" और बस, वही सवाल इस बदलाव की शुरुआत बन गया। इस उत्साह की खबर तेजी से जारिया मॉडल क्लस्टर लेवल फेडरेशन (CLF) तक पहुँची। CLF ने तुरंत समझा कि कम निवेश, अच्छी मांग, और महिलाओं के लिए सहज पोल्ट्री एक बेहतरीन अवसर हो सकता है। फील्ड कैडरों के सहयोग से आम सभा की बैठक बुलाई गई, सर्वेक्षण हुआ, योजना बनी, और हर महिला की आवाज़ सुनी गई। सरकार और मिशन के सहयोग से प्रशिक्षण, तकनीकी सहायता और बाज़ार से जोड़ने का तंत्र भी तैयार किया गया। ₹20 लाख का निवेश, 10,000 सोनाली चूज़ों के साथ एक सामूहिक पोल्ट्री यूनिट खड़ी हुई। स्वच्छता और टीकाकरण से चूज़ों की मृत्यु दर घटी, और अंडों की बिक्री हर महीने ₹60,000 के पार पहुँच गई। लेकिन असली सफलता तो इन दीदियों की ज़िंदगी में आई। लाली उरांव, जो कभी खेतों में दिहाड़ी मजदूरी करती थीं, अब न केवल प्रोड्यूसर ग्रुप की लीडर हैं, बल्कि CLF उप-समिति की अध्यक्ष भी हैं। उनके बच्चे अब अच्छे स्कूल में पढ़ते हैं। आज लाली केवल अपनी ही नहीं, पूरे गांव की महिलाओं की प्रेरणा बन चुकी हैं।

उनके नेतृत्व में आस-पास के गांव कटरमाली, डिगिया और मुर्थो भी यही मॉडल अपनाने को तैयार हैं। हैचरी, ब्रांडिंग, और विक्रेता नेटवर्क जैसी बड़ी योजनाएं आकार ले रही हैं। जिला प्रशासन अब इसे पूरे रांची ज़िले में फैलाने की योजना बना रहा है। यह कोई साधारण मुर्गी पालन नहीं, यह महिला सशक्तिकरण की उड़ान है। जब महिलाओं को अवसर, प्रशिक्षण और भरोसा दिया जाए तो वो न सिर्फ़ सपने देखती हैं, बल्कि उन्हें साकार भी करती हैं। ये चूज़े अब सिर्फ़ आय का ज़रिया नहीं, परिवर्तन के पंख बन चुके हैं।

पुदुचेरी

कुशल हाथों से आत्मनिर्भर भविष्य तक - अबिषेगपक्कम सीएलएफ की कहानी

अबिषेगपक्कम की दीदियाँ: सुई-धागे से बुन रही आत्मनिर्भरता की मिसाल

अरियानकुप्पम: पुदुचेरी के अरियानकुप्पम ब्लॉक का एक छोटा-सा गाँव अबिषेगपक्कम। यहाँ की गलियों में एक नयी हलचल है, कुछ महिलाएं सिलाई मशीनों पर व्यस्त हैं, कुछ बैगों की पैकिंग कर रही हैं, तो कुछ स्क्रीन प्रिंटिंग सिखा रही हैं। यह बदलाव एक सपने की तरह शुरु हुआ, सपना कुछ कर दिखाने का।

2017 में गठित थिरुमहाल स्वयं सहायता समूह (SHG) की पाँच महिलाएं मालती, गुणा, माघेश्वरी, लक्ष्मी और सरन्या देवी ने मिलकर 2021 में एक नया रास्ता चुना। उन्होंने 'श्रीमहाल थैयाल उरपथियालरगल कुज़ू' नाम से एक संयुक्त उत्तरदायित्व समूह (JLG) बनाया और सामुदायिक निवेश निधि (CIF) से मिले आर्थिक सहयोग से पाँच सिलाई मशीनें खरीदीं।

एक छोटा कदम, लेकिन बड़ी शुरुआत

उन्होंने थांबूला बैग्स की सिलाई शुरु की, वो रंग-बिरंगे बैग जो शादियों, धार्मिक अनुष्ठानों और गृहप्रवेश जैसे मौकों पर बाँटे जाते हैं। धीरे-धीरे, उनके बनाए बैग्स की गुणवत्ता ने स्थानीय बाजार में पहचान बनाई और माँग बढ़ने लगी।

महिलाओं ने खुद को सीमित नहीं रखा। उन्होंने कपड़ों की कटाई और स्क्रीन प्रिंटिंग में उन्नत प्रशिक्षण लिया और अपने काम का दायरा बढ़ाया। अब न केवल स्थानीय दुकानदारों, बल्कि निजी कंपनियों जैसे Miami Cushion Pvt. Ltd., और यहां तक कि पुदुचेरी सरकार के विज्ञान एवं पर्यावरण निदेशालय से भी ऑर्डर आने लगे। समूह ने अपने मुनाफे को फिर से व्यवसाय में लगाया। सामुदायिक विकास निधि (CDF), अतिरिक्त CIF और बैंक लिंकेज से पाँच और मशीनें खरीदीं, जिसमें एक विशेष जूट बैग सिलाई मशीन भी थी। इसके बाद उन्होंने पास के SHGs की महिलाओं को प्रशिक्षित करना शुरु किया, उन्हें काम देने लगीं, इससे न केवल उनके व्यवसाय को बल मिला, बल्कि अन्य महिलाओं को भी रोज़गार और आत्मनिर्भरता का अवसर मिला।

हर मोड़ पर मिला हौसला - PLF और BLF बनें मजबूत साथी

समय पर मिली आर्थिक मदद, प्रशिक्षण की व्यवस्था, और लगातार मिले प्रोत्साहन ने महिलाओं के आत्मविश्वास को नई ऊँचाई दी, हाल ही में इन महिलाओं को NRLM के तहत ₹1.5 लाख का स्टार्ट-अप फंड प्राप्त हुआ, अब ये महिलायें सामूहिक रूप से सालाना ₹7.2 लाख रुपये की आमदनी करती हैं।

यह सिर्फ एक सिलाई केंद्र नहीं है, बल्कि यह महिलाओं के आत्मबल और टीमवर्क का प्रतीक है। इनकी प्रतिबद्धता और जज्बे को नई उड़ान तब मिली जब इन्हें देश के माननीय प्रधानमंत्री जी से मिलने का अवसर मिला।

ये महिलाएं अब सिर्फ कारीगर नहीं, बल्कि रोल मॉडल बन चुकी हैं, अपने समुदाय के लिए, और उनके लिए जो अब भी सपनों को हकीकत मानने से डरते हैं।

महाराष्ट्र

धनज्योति क्लस्टर फेडरेशन: महिलाओं की अगुवाई में बदलाव की मिसाल

सशक्त दीदियों के नेतृत्व में ग्राम विकास की नई मिसाल

रत्नागिरी: रत्नागिरी जिले के तटवर्ती गांव नाचने की गलियों में आज बदलाव की एक नई कहानी लिखी जा रही है। मार्च 2017 में गठित धनज्योति मॉडल क्लस्टर लेवल फेडरेशन (एमसीएलएफ) आज 242 स्वयं सहायता समूहों (SHGs), 6,034 परिवारों और 2,472 सक्रिय महिला सदस्यों की ताक़त बन चुकी है।

लेकिन यह सिर्फ़ आंकड़ों की बात नहीं है। यह कहानी है उस पारदर्शी, सहभागी और समावेशी शासन की, जिसने गांव की महिलाओं को ग्राम सभा में आत्मविश्वास से बोलने, निर्णय लेने और नेतृत्व करने का साहस दिया। हर स्तर पर चुनी गई उप-समितियां जैसे वित्त, जीविकोपार्जन, अनुपालन और योजना पर काम करती हैं। पूर्व पदाधिकारियों द्वारा नए नेतृत्व को मेंटरशिप, मासिक बैठकें और डिजिटल माध्यमों से संवाद यह सब मिलकर एक मजबूत और जीवंत संस्था को आकार देता है, जो जमीनी लोकतंत्र का जीता-जागता उदाहरण बन चुकी है।

आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते कदम: वित्तीय अनुशासन से सामाजिक बदलाव तक

धनज्योति एमसीएलएफ सिर्फ़ संस्था नहीं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण का माध्यम बन चुका है।

📌 वित्तीय प्रबंधन

- ₹2.49 करोड़ का ऋण प्रबंधन, जिसमें से ₹1.10 करोड़ सामुदायिक निवेश कोष (CIF) के माध्यम से प्राप्त
- ₹90,000 तक के व्यक्तिगत ऋण, वो भी शून्य NPA के साथ
- सेवा शुल्क और आंतरिक फंड रोटेशन से संस्था की आय

📌 जीविकोपार्जन में नवाचार

- PMFME योजना के तहत ₹1.18 करोड़ की राशि से 200+ खाद्य प्रसंस्करण उद्यमों को सहयोग प्रदान किया।
- टेलरिंग, डेयरी और बर्तन निर्माण से जुड़ी प्रोड्यूसर ग्रुप्स को ₹16 लाख की सहयोग राशि दी गयी।
- हर सदस्य का स्किल मैपिंग कर, ज़रूरत के अनुसार जिला उद्योग केंद्र (DIC) और ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI) के साथ ट्रेनिंग

📌 सामाजिक उत्तरदायित्व

- आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की मदद से पोषण और स्वास्थ्य जागरूकता
- पोषण वाटिका, स्वच्छता और सुरक्षा को बढ़ावा
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा में समर्थन
- पंचायतों के साथ मिलकर अधोसंरचना विकास

धनज्योति का सफर एक बात को स्पष्ट करता है की जब संस्थाएं मजबूत होती हैं, तो बदलाव अंतिम व्यक्ति तक पहुंचता है। यह एक प्रेरक उदाहरण है कि सामुदायिक भागीदारी, वित्तीय अनुशासन और कुशल नेतृत्व मिलकर कैसे गांवों को आत्मनिर्भरता और विकास की राह पर ले जा सकते हैं।

मिज़ोरम

जहां नेतृत्व बन गया रोज़गार का आधार: 'लखपति दीदी' की कहानी

एक छोटे से समूह से शुरू किया सफ़र, आज बन गई रोल मॉडल

खवज़ोल: मिज़ोरम के खवज़ोल ज़िले के दूरस्थ गांव 'न्यू चालरंग' में निवास करने वाली ललथनसांगी, जिनकी कहानी यह साबित करती है कि अगर महिला को सही मंच, समर्थन और अवसर मिले तो वह न केवल अपना जीवन बदल सकती है, बल्कि अपने पूरे समुदाय की दिशा भी तय कर सकती है।

1973 में जन्मी ललथनसांगी छह सदस्यों के अपने परिवार के साथ, मात्र ₹8,000 मासिक की दिहाड़ी आय पर गुजर-बसर कर रही थीं। लेकिन उनके जीवन में एक नया मोड 2017 में आया, जब वे तुइचंग्राल मॉडल सी.एल.एफ. के अंतर्गत 'रूथी स्वयं सहायता समूह' से जुड़ीं। एक साल के भीतर ही वे अपने ग्राम संगठन की कोषाध्यक्ष चुनी गईं, जहां उनका नेतृत्व और करुणा साफ झलकने लगा।

वे न केवल कमज़ोर एस.एच.जी. समूहों का सहयोग करने लगीं, बल्कि एचआईवी-ग्रस्त लोगों, बुजुर्गों और दिव्यांगजनों जैसे वंचित समूहों के साथ मिलकर समावेशी विकास को आगे बढ़ाने में भी जुट गईं। नवंबर 2022 में, वे तुइचंग्राल मॉडल क्लस्टर लेवल फेडरेशन की अध्यक्ष बनीं और इस नई ज़िम्मेदारी ने उन्हें और भी व्यापक स्तर पर महिलाओं को सशक्त करने का अवसर दिया।

आर्थिक सशक्तिकरण की राह

2018 में ₹10,000 के छोटे से रिवॉल्विंग फंड से शुरू हुआ उनका आर्थिक सफ़र, अब ₹7 लाख से अधिक के कुल ऋण उपयोग तक पहुंच चुका है। इसमें सीआईएफ, बैंक लोन और किसान क्रेडिट कार्ड की भूमिका रही। उन्होंने हर फंड का इस्तेमाल रणनीतिक रूप से किया जैसे सूअर पालन का विस्तार, एग्रो-इनपुट रिटेल शॉप की स्थापना, और फिर अपने खुद के फूड ब्रांड 'S&R' की शुरुआत की।

कमाई के साथ पहचान भी

उनके उत्पाद जैम, स्क्वैश और शहद सरस आजीविका मेला, दिल्ली और मिज़ोरम में आयोजित सरस मेले जैसे मंचों पर प्रदर्शित हुए हैं। अकेले संतरे की खेती से ही उन्हें सालाना ₹1.5 लाख की आय हो रही है। इसके अलावा, उनके उद्यमों ने स्थानीय रोज़गार के अवसर भी बढ़ाए हैं और किसानों को ज़रूरी इनपुट्स की उपलब्धता सुनिश्चित की है।

सिर्फ़ बदलाव नहीं, प्रेरणा भी हैं ललथनसांगी

उनकी यात्रा यह दिखाती है कि यदि महिलाओं को पूंजी, नेतृत्व और संस्थागत सहयोग मिले तो वे सिर्फ़ अपने घर की नहीं, बल्कि पूरे गांव की आर्थिक दिशा बदल सकती हैं। ललथनसांगी आज 'लखपति दीदी' ही नहीं, बल्कि एक सशक्त सामुदायिक लीडर भी हैं, जो साबित करती हैं कि नेतृत्व और आजीविका जब साथ आते हैं, तो बदलाव निश्चित होता है।

> "एक समय था जब मैं अपने बच्चों की बुनियादी ज़रूरतें भी पूरी नहीं कर पाती थी। SHG से जुड़ना मेरे जीवन का टर्निंग पॉइंट बन गया। M-CLF से मिले सहयोग और समय पर मिले ऋण की मदद से मैंने छोटे पैमाने पर शुरुआत की और धीरे-धीरे आगे बढ़ती गई। आज मैं अपना खुद का रिटेल शॉप चला रही हूं, अपने ब्रांड के तहत फूड प्रोसेसिंग कर रही हूं और एक एमसीएलएफ का नेतृत्व भी कर रही हूं।"
>
> **ललथनसांगी, अध्यक्ष**
> **तुइचंग्राल मॉडल सी.एल.एफ**

हिमाचल प्रदेश

सबका साथ - सबका विकास CLF: जहाँ हर दीदी की मेहनत बन रही है बदलाव की पहचान

कहानी 200 लखपति दीदियों के समर्पण, आत्मविश्वास और नेतृत्व की...

मशोबरा: अगर आपसे कहा जाए कि एक संकुल स्तरीय संगठन 200 से ज़्यादा महिलाओं को "लखपति दीदी" बना सकता है, तो क्या आप मानेंगे? शिमला के मशोबरा ब्लॉक में बनी सबका साथ सबका विकास CLF ने यह कर दिखाया है और वो भी सिर्फ़ तीन साल में!

1 दिसंबर 2020 को शुरू हुआ यह CLF, अब 20 ग्राम संगठनों, 189 स्वयं सहायता समूहों और 1,641 महिलाओं की आवाज़ बन चुका है।

शुरुआत में यह संगठन सिर्फ़ मूलभूत प्रशिक्षण और सामुदायिक बैठकें करता था। लेकिन जब 2022-23 में इसे मॉडल CLF का दर्जा मिला, तो मानो इसकी पहचान ही बदल गई। हिमाचल प्रदेश राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के सहयोग से एक स्पष्ट विज़न बना - 'हर दीदी की आमदनी बढ़ानी है, और उसे आत्मनिर्भर बनाना है।'

Participatory Rural Appraisal (PRA) के ज़रिए गाँवों में मौजूदा संसाधनों और कौशल की पहचान की गई, फिर चाहे वह जैविक खेती हो या डेयरी, सिलाई हो या बकरी पालन। महिलाओं को प्रशिक्षण मिला, योजनाओं से जोड़ा गया, और CIF व स्टार्टअप फंड्स के ज़रिए पूंजी भी मिली।

आज यही CLF 200 से अधिक महिलाओं को सालाना ₹1 लाख से ज़्यादा कमाने वाली लखपति दीदी बना चुका है। शिमला में उनका खुद का बुक कैफ़े है, जहाँ किताबें हैं, कहानियाँ हैं और वो आत्मविश्वास भी है जो इस सफर का मूल है। यह कैफ़े ONDC पर भी लिस्टेड है, यानी डिजिटल दुनिया में भी इनकी पहचान है।

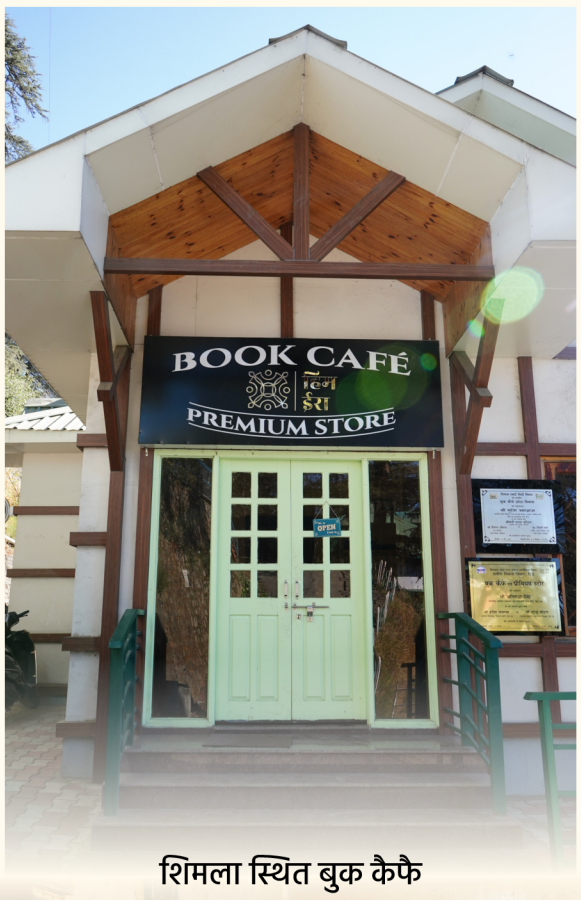

शिमला स्थित बुक कैफे

सहयोग, समर्पण और सामूहिक नेतृत्व

CLF ने सरकारी योजनाओं, विभागों और बैंकों से जुड़ाव बढ़ाया। 'Him-Ira' मॉडल स्टोर ने इनके उत्पादों को बाज़ार दिया। महिलाओं ने केवल पैसे नहीं कमाए, उन्होंने आत्मविश्वास, पहचान और नेतृत्व कमाया।

परिवर्तन सिर्फ़ आय में नहीं, सोच में भी दिखा है। अब इन गाँवों की महिलाएं अपने बच्चों को बेहतर स्कूल भेज रही हैं, खुद के व्यवसाय चला रही हैं, और अन्य दीदियों को भी सशक्त बना रही हैं।

तो अगली बार जब आप किसी ग्रामीण महिला को देखें, तो याद रखें, वो सिर्फ़ एक गृहिणी नहीं है, वो एक उद्यमी, एक लीडर, और बदलाव की मिसाल हो सकती है।

सबका साथ-सबका विकास CLF ने यही सिखाया है की जब महिलाओं को मिलती है सही दिशा, तो वो सिर्फ़ अपनी नहीं, पूरे गाँव की तक़दीर बदल देती हैं।

मशोबरा ब्लॉक स्थित
Him-Ira स्टोर

केरल

सस्तमकोट्टा MCLF: सामुदायिक सशक्तिकरण और आजीविका का एक आदर्श मॉडल

समाज के विभिन्न वर्गों को सम्मानजनक और उपयुक्त आजीविका से जोड़ने का अनूठा प्रयास

कोल्लम: कोल्लम जिले का सस्तमकोट्टा मॉडल क्लस्टर लेवल फेडरेशन (MCLF) आज जमीनी स्तर पर उद्यमिता और समावेशिता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण बन चुका है। 'कुदुम्बश्री' के अंतर्गत संचालित यह CLF 19 ग्राम संगठनों और 356 स्वयं सहायता समूहों (SHGs) के साथ मिलकर ग्रामीण महिलाओं को सशक्त करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। स्थानीय संसाधनों जैसे बाँस, नाल (रीड्स) और पारंपरिक मसालों का उपयोग कर इस CLF ने अनेक नए उद्यमों को जन्म दिया है। जहाँ एक ओर महिलाएं हस्तनिर्मित शिल्प का निर्माण कर रही हैं, वहीं दूसरी ओर करी पाउडर और नारियल तेल जैसे उत्पादों की ऑटोमेटेड यूनिट्स भी स्थापित की गई हैं। नई सोच और संसाधन-आधारित उद्यमिता ही इस सफलता की पहचान बन गई है।

महिला लेबर बैंक: गरिमापूर्ण कार्य और समावेशी अवसरों की एक नई राह

सस्तमकोट्टा एमसीएलएफ द्वारा के-डिस्क (केरल डिवेलपमेंट एंड इनोवेशन स्ट्रैटेजिक काउंसिल) परियोजना के तहत विकसित महिला लेबर बैंक एक अनूठी पहल है, जो हाशिए पर मौजूद लोगों को सम्मानजनक और उपयुक्त आजीविका से जोड़ने का काम कर रही है।

इस मॉडल की सबसे खास बात इसकी समावेशिता है। यह न केवल महिलाओं, बल्कि दिव्यांगजनों और ट्रांसजेंडर को भी बराबरी से अवसर देता है।

पंजीकृत सदस्यों की विस्तृत प्रोफाइल के आधार पर, लेबर बैंक उनकी रुचियों, कौशल और स्थान को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त नौकरियों से जोड़ता है। चाहे वह घरेलू सहायिकाओं को परिवारों से जोड़ना हो, छोटे व्यवसायों को प्रशिक्षित सहायक उपलब्ध कराना हो या फिर वंचित वर्गों को आजीविका गतिविधियों से जोड़ना। यह बैंक एक विकेंद्रीकृत, समुदाय आधारित रोजगार एक्सचेंज के रूप में कार्य कर रहा है।

1000+
लेबर बैंक के लाभार्थी

20+
आजीविका पहलें
(जैसे नारियल तेल, सरबत्त, मशरूम उत्पाद, बाँस शिल्प आदि)

सामाजिक सशक्तिकरण और विकास की दिशा में सस्तमकोट्टा MCLF के प्रयास

- **महिलाओं की नई शुरुआत:** FNHW के सहयोग से DB कॉलेज में औषधीय पौधों पर जागरूकता सत्र में कई महिलाएं पहली बार कॉलेज कैंपस पहुंचीं।
- **विमेंस रीडिंग कॉर्नर:** पढ़ने-लिखने की आदत और संवाद को बढ़ावा देने के लिए एक रीडिंग स्पेस की शुरुआत।
- **इंटरजेनरेशनल कैंप:** बच्चों और बुजुर्गों के लिए रचनात्मक ग्रीष्मकालीन शिविर - चित्रकला, संगीत और साझा अनुभवों के साथ।
- **हरित नेतृत्व:** SHG सदस्यों की 'हरिथा कर्मसेना' गांवों में स्वच्छता और पर्यावरणीय जागरूकता की मिसाल बन रही है।
- **हरित उद्यमिता:** महिलाओं को हरित व्यवसायों के लिए संगठित किया गया है, अब वे कंसोर्टियम के तहत निर्णय ले रही हैं।
- **संतुलित विकास:** पोषण महोत्सव, जागरूकता अभियान और कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रमों के ज़रिए सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण एक साथ हो रहा है।

इस मॉडल ने आजीविका तक पहुँच को आसान बनाया है और समाज से वंचित सदस्यों में आत्मविश्वास को मजबूत किया है, जिससे वे गरिमा के साथ आगे बढ़ सकें और स्थानीय अर्थव्यवस्था में सक्रिय भागीदारी निभा सकें। सस्तमकोट्टा एमसीएलएफ इस मंच को लगातार विस्तारित कर रहा है, ताकि हर महिला चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो, आर्थिक आत्मनिर्भरता की राह पर अग्रसर हो सके।

फ्लोचार्ट – लेबर बैंक कैसे कार्य करता है

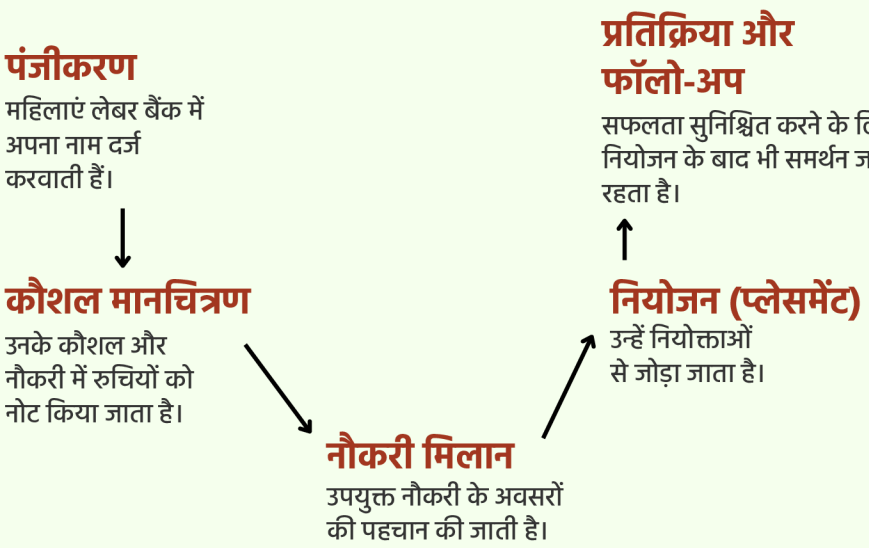

डिजिटल कोना

M-CLF और विभिन्न हस्तक्षेपों के अंतर्गत वर्तमान स्थिति की अधिक जानकारी के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें।

गतिविधियां

सीएलएफ में अनुपालन प्रणाली सुदृढ़ करने हेतु, राष्ट्रीय स्तर की ट्रेनिंग ऑफ ट्रेनर्स (ToT) का आयोजन

देशभर में अब तक 19,000 से अधिक क्लस्टर लेवल फेडरेशन्स (CLFs) पंजीकृत हो चुके हैं। ऐसे में वैधानिक और वित्तीय नियमों का पालन सुनिश्चित करना एसएचजी ढांचे की एक प्राथमिकता है। इसी आवश्यकता को देखते हुए MCLF-NMMU टीम ने हाल ही में 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (Training of Trainers - ToT) की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य CLF स्तर पर अनुपालन प्रणाली को सशक्त बनाना है।
इस पहल के ज़रिए न केवल प्रक्रियाओं को मजबूत किया जा रहा है, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया जा रहा है कि सभी CLFs सुचारु, पारदर्शी और उत्तरदायी तरीके से कार्य करें।

तीन राज्यों में राष्ट्रीय स्तर प्रशिक्षण का आयोजन

यह प्रशिक्षण 22 अप्रैल से 9 मई, 2025 के बीच तीन चरणों में त्रिपुरा, हिमाचल प्रदेश, गुजरात में आयोजित किया गया।

98
मास्टर स्टेट रिसोर्स पर्सन्स (SRPs)

127
स्टेट रिसोर्स पर्सन्स (SRPs)

30
राज्य/केंद्रशासित प्रदेशों से भागीदारी

प्रशिक्षण का फोकस और क्रियान्वयन

इस कार्यक्रम की विशेषता थी उसका स्तरीकृत (tiered) दृष्टिकोण, जिससे ज़मीनी स्तर पर CLF में अनुपालन प्रक्रियाओं का सुदृढ़ीकरण सुनिश्चित किया गया:

- **अधिनियमों, उपनियमों और अनुपालन प्रक्रियाओं की जानकारी को सशक्त करना**
- **मास्टर SRPs को प्रशिक्षित करना ताकि वे अपने-अपने राज्यों के SRPs को प्रशिक्षित कर सकें**
- **केस स्टडी और वास्तविक जीवन स्थितियों के ज़रिए व्यावहारिक ज्ञान को प्राथमिकता देना**

आगे की दिशा: अनुपालन इकोसिस्टम को मजबूत करना

- **CLF स्टाफ और बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स (BoDs) का SRP के द्वारा प्रशिक्षण**
- **उन्नत विषयों पर रिफ्रेशर ट्रेनिंग और ऑनलाइन मॉड्यूल**
- **अनुपालन संसाधन टूलकिट का विकास**
- **समुदाय आधारित अनुपालन प्रबंधन प्रणाली की स्थापना**

अगरतला, त्रिपुरा

शिमला, हिमाचल प्रदेश

अहमदाबाद, गुजरात

> **शिमला में आयोजित सीएलएफ रजिस्ट्रेशन और अनुपालन पर प्रशिक्षण अत्यंत जानकारीपूर्ण और सुव्यवस्थित था। इसने हमें कानूनी प्रक्रियाओं, वैधानिक दायित्वों और CLF की स्थिरता के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रथाओं को समझने में मदद की। संवादात्मक सत्रों और केस डिस्कशन के माध्यम से हमने अपने राज्य में CLF बोर्ड और स्टाफ के लिए प्रशिक्षण आरंभ करने का आत्मविश्वास पाया।**
>
> -उद्भवना चौहान,
> मास्टर SRP, हिमाचल प्रदेश

गतिविधियां

सामुदायिक संस्थाओं में वित्तीय सुशासन को मजबूत करने हेतु पहल:

हमारा धन, हमारा हिसाब

ग्रामीण स्तर पर वित्तीय पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ावा देने के लिए, 'हमारा धन, हमारा हिसाब' नामक एक राष्ट्रीय अभियान शुरू किया गया। यह अभियान स्वयं सहायता समूहों (SHGs), ग्राम संगठन (VOs) और क्लस्टर लेवल फेडरेशन (CLFs) पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य मजबूत आंतरिक ऑडिट सिस्टम को संस्थागत बनाना और समुदाय को वित्तीय मामलों की ज़िम्मेदारी सौंपना है।

अभियान का दायरा और पहुंच

SRLMs के सक्रिय सहयोग और समुदाय की भागीदारी के साथ
इस अभियान ने व्यापक स्तर पर प्रभाव डाला:

46,241
सामुदायिक ऑडिटर्स को प्रशिक्षित कर तैनात किया गया

24,467
क्लस्टर लेवल फेडरेशन का ऑडिट किया गया

20,99,298
स्वयं सहायता समूहों का ऑडिट किया गया

यह अभियान सामुदायिक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं को वित्तीय प्रबंधन और ऑडिट से जुड़ी जानकारी और टूल्स से लैस करने के लिए विभिन्न स्तरों पर सशक्तिकरण गतिविधियों के माध्यम से आगे बढ़ा।

राष्ट्रीय लॉन्च और ऑनबोर्डिंग

विभिन्न SRLM को विजन से जोड़ने और सामुदायिक जवाबदेही की शुरुआत के लिए एक राष्ट्रीय ऑनबोर्डिंग कार्यक्रम आयोजित किया गया।

वित्तीय जवाबदेही के लिए कैडर निर्माण

राज्य और CLF स्तर पर प्रशिक्षण सत्र आयोजित कर, 42,571 से अधिक सामुदायिक ऑडिटर्स को प्रशिक्षित किया गया।

NIRDPR में आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला

हैदराबाद में आयोजित इस राष्ट्रीय कार्यशाला में देशभर के 29 SRLMs से 140 आंतरिक ऑडिट रिसोर्स पर्सन एकत्रित हुए, यह अभियान का एक महत्वपूर्ण पड़ाव था।

केरल में आंतरिक ऑडिट पर राष्ट्रीय कार्यशाला

कोच्चि में आयोजित इस कार्यशाला में 28 राज्यों के स्टेट मिशन डायरेक्टर्स और वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। इसने पूरे अभियान को मजबूती से समेकित किया।

केरल में राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन

कार्यशाला के दौरान MCLF का अवलोकन

कार्य में जुटे सामुदायिक ऑडिटर्स

असर - हमारा धन, हमारा हिसाब, बिहार

शक्ति जीविका सीएलएफ, बिहार: आंतरिक ऑडिट के ज़रिए वित्तीय अनुशासन की दिशा में सशक्त कदम

समस्तीपुर: बिहार के समस्तीपुर जिले के मोहनपुर प्रखंड में स्थित शक्ति जीविका महिला विकास स्वावलंबी सहकारी समिति लिमिटेड (CLF) ने एक उल्लेखनीय परिवर्तन की कहानी लिखी है। यह बदलाव केवल खातों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें छिपी है विश्वास, जवाबदेही और सामुदायिक नेतृत्व की सशक्त तस्वीर।

2024–25 में "हमारा धन, हमारा हिसाब" मुहिम के तहत इस CLF ने आंतरिक अंकेक्षण की प्रक्रिया को अपनाया, जिसमें समुदाय से ही प्रशिक्षित आंतरिक अंकेक्षकों ने नेतृत्व किया। पहले चरण में, अंकेक्षण के दौरान कई गंभीर कमियाँ सामने आईं - समय पर ऋण की वसूली नहीं होना, पुराने लेखे-जोखे, बहीखातों में गड़बड़ी, और बैंक समाधान विवरणियों का अभाव।

लेकिन, यहीं से शुरू हुई एक नई दिशा की यात्रा। जैसे-जैसे तीन चरणों में अंकेक्षण पूरे हुए, संगठन ने खुद को बदलने का बीड़ा उठाया। बहीखाते नियमित रूप से अपडेट होने लगे, बैंक समाधान विवरणियाँ पहली बार लेखापालों और अंकेक्षकों के सहयोग से बनीं। ग्राम संगठनों को समय पर ऋण मिलना शुरू हुआ, जिससे ज़रूरतमंद परिवारों को नई उम्मीद मिली।

पहले	अब
• ऋण की अदायगी में देरी • समाधान विवरणी उपलब्ध नहीं • अपूर्ण लेखा-बही	• समय पर ऋण अदायगी • अद्यतन बहीखाते • बेहतर ग्रेडिंग

आय में बढ़ोत्तरी और संस्थागत मजबूती की कहानी

आंतरिक अंकेक्षण ने संस्था की आय को भी प्रभावित किया। 2023–24 में जहां ICF (CIF) ऋण से ₹11.9 लाख का ब्याज मिला था, वहीं 2024–25 में यह ₹14.26 लाख हो गया। सामान्य ऋणों से आय ₹2.67 लाख से दोगुनी होकर ₹5.34 लाख हो गई। सुधार केवल आंकड़ों में नहीं, बल्कि व्यवहार में भी दिखा। पहले जिन ग्राम संगठनों को 'कमज़ोर' माना जाता था, अब वे नियमित बैठकें कर रहे हैं, और समय पर ऋण वापसी भी।

अभी नहीं, तो कभी नहीं!

एक समय जो संगठन पिछड़ रहे थे, अब यह संगठन मिसाल बन गए हैं। अंकेक्षण से मिली जानकारी के आधार पर CLF ने इन ग्राम संगठनों में निरंतर भ्रमण और मार्गदर्शन शुरू किया, जिससे सकारात्मक बदलाव स्पष्ट रूप से दिखने लगे। सीएलएफ के प्रयास से अब सभी ग्राम संगठन मासिक वित्तीय रिपोर्टिंग, MIS अपडेट और ग्रेडिंग की प्रक्रिया को गंभीरता से अपना रहे हैं।

आंतरिक अंकेक्षण का असर

100%
बहीखाते हर महीने अपडेट होते हैं

₹2.36L
लाख की अतिरिक्त ब्याज आय

सभी ग्राम संगठन अब बैंक समाधान विवरणी बना रहे हैं

25+ सामुदायिक अंकेक्षक प्रशिक्षित

यह बदलाव केवल संगठन का नहीं, पूरे समुदाय का है। यह कहानी बताती है कि जब समुदाय को जिम्मेदारी दी जाती है और उन्हें सही प्रशिक्षण और सहयोग मिलता है, तो वे न केवल अपने संगठन को सुधार सकते हैं, बल्कि पूरे गाँव की दिशा बदल सकते हैं।

अवलोकन से बदलाव तक की यात्रा

अवलोकन:
वाउचर प्रविष्टियाँ दर्ज ही नहीं की गई थीं, जिससे लेखांकन की पारदर्शिता और सटीकता पर असर पड़ा।

मूल कारण:
ग्राम संगठन और संकुल स्तरीय समिति के सदस्यों को लेखा प्रबंधन और दस्तावेजीकरण की पर्याप्त जानकारी और प्रशिक्षण नहीं था।

किए गए कार्य:
इस अंतर को पाटने के लिए एक विशेष क्षमता निर्माण सत्र आयोजित किया गया।

परिणाम:
सिर्फ दो महीनों के भीतर 100% वाउचर प्रविष्टियाँ पूरी कर ली गईं, जिससे संगठन की लेखा प्रणाली अधिक संगठित और पारदर्शी बन गई।

ग्रामीण विकास मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF RURAL DEVELOPMENT
GOVERNMENT OF INDIA

मॉडल सीएलएफ: मज़बूत नींव, उज्ज्वल भविष्य

संपादकीय

मॉडल सीएलएफ (CLF) पहल की शुरुआत आजीविका मिशन के अंतर्गत इस दृष्टि के साथ हुई थी कि गरीब परिवारों की स्वामित्व वाली, आत्मनिर्भर और वित्तीय रूप से मज़बूत संस्थाओं का निर्माण किया जाए। वर्ष 2017-18 में केवल 55 मॉडल सीएलएफ से आरंभ होकर यह यात्रा आज 8,312 से अधिक संस्थानों तक पहुँच चुकी है। हर मॉडल सीएलएफ को सुशासन, वित्तीय प्रणाली, आजीविका, सामाजिक समावेशन और अधिकार की प्राप्ति का एक आदर्श केंद्र बनाया जा रहा है।

लेकिन यह भी उतना ही स्पष्ट है कि केवल संख्या बढ़ाना पर्याप्त नहीं है। गुणवत्ता और प्रभाव ही असली पैमाना है। हालिया फील्ड आकलनों ने दिखाया है कि शासन-प्रणालियों, वित्तीय योजना, संस्थागत प्रक्रियाओं और सेवा वितरण में अभी भी सुधार की ज़रूरत है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारी यात्रा अभी अधूरी है और निरंतर तकनीकी सहयोग, क्षमता निर्माण तथा निगरानी की आवश्यकता बनी हुई है।

यह न्यूज़लेटर हमारी सामूहिक उपलब्धियों का लेखा-जोखा भर नहीं है बल्कि आने वाले समय की कार्ययोजना भी है। हमें अब एकजुट होकर तीन स्तरों पर ध्यान केंद्रित करना होगा:

- महिलाओं और समुदाय-आधारित नेतृत्व को मज़बूत करना
- मॉडल सीएलएफ की कोर प्रणालियों को गहराई और पारदर्शिता के साथ लागू करना
- नवाचार और सेवा वितरण को प्राथमिकता देना

मंत्रालय ने इस दिशा में हमें आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराए हैं - Viability Gap Fund, बुनियादी ढाँचे का सहयोग, और प्रशिक्षित सामुदायिक व राज्य स्तरीय संसाधन व्यक्तियों की एक सशक्त टीम। अब इन्हें ज़मीन पर परिणाम में बदलना हम सबकी साझा ज़िम्मेदारी है।

यह दृष्टि अब कागज़ पर लिखी आकांक्षा भर नहीं रहनी चाहिए - इसे ज़मीन पर उतारना ही हमारी असली परीक्षा है। कार्य स्पष्ट है। अब हमें क्रियान्वयन को हर स्तर पर मज़बूत कर, मॉडल सीएलएफ पहल की पूर्ण क्षमता को साकार करना है।

डॉ. जुई भट्टाचार्य
राष्ट्रीय मिशन प्रबंधक, आई.बी.सी.बी, राष्ट्रीय मिशन प्रबंधन यूनिट,
DAY-NRLM

संपादकीय दल

सलाहकार

श्रीमती स्मृति शरण
संयुक्त सचिव (आरएल-I),
ग्रामीण विकास मंत्रालय,
भारत सरकार

डॉ. मोनिका
उप सचिव (आरएल),
ग्रामीण विकास मंत्रालय,
भारत सरकार

रमन वाधवा
उप निदेशक

प्रधान संपादक

डॉ. जूई भट्टाचार्य
राष्ट्रीय मिशन प्रबंधक,
आई.बी.सी.बी, एनएमएमयू
DAY-NRLM

संपादक मंडल

शुभलक्ष्मी रॉय
राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रबंधक,
आई.बी.सी.बी, एनएमएमयू
DAY-NRLM

अमन राज
राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रबंधक,
आई.बी.सी.बी, एनएमएमयू
DAY-NRLM

संपर्क
kmc.mclfnrlm@gmail.com

Contributors :

Mr. Manish Das,
Manager,
Bijoyee CLF,
Tripura

Dhiraj Ghosh,
SMS-Livelihood,
Model CLF,
Jharkhand SRLM

P. Rajeswari,
Manager, Block Level
Federation, Ariyankuppam,
Puducherry

Ramdas Dhumale
SMM HR&CB
Amey Rajeshirke
Cluster Coordinator,
Maharasthra SRLM

Pictures :
Souparno Chatterjee,
Akhilesh Sharma, Aman Raj

Lalrinzuali Varte,
BMM, Khawzawl,
Mizoram

Udbhavna,
Mission Executive,
Himachal
Pradesh

Miss Noorjahan,
IBCB Technical Expert
Nimeesha Rochelle,
PR Intern,
Kudumbashree, Kerala
Mr. Sanjay Mishra
State Program Manager,
Mr Satish,
Program Manager
Bihar SRLM

बीजोयी सीएलएफ ने हमें एक ऐसा मंच दिया जहाँ हमारी आवाज़ सुनी गई। सी.एल.एफ से मिले सहयोग से मैंने अपना छोटा व्यवसाय शुरू किया और अपनी आमदनी बढ़ाई। अब ऐसा लगता है कि हम सिर्फ़ सपने नहीं देख रहे, बल्कि उन्हें जी भी रहे हैं।

अंजना सरकार,
सदस्य, नवरात्रि महिला समूह, बीजोयी सीएलएफ, टेपानिया, त्रिपुरा

भविष्य के संस्करणों को और बेहतर बनाने के लिए हम आपके सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं। कृपया QR कोड स्कैन करें और सुझाव दें।